भारतीय ज्ञान प्रणाली और नई शिक्षा नीति (NEP): एक सशक्त भारत का निर्माण

डॉ. दीपिका शर्मा
सहायक प्रोफेसर
जगननाथ विश्वविद्यालय, एन.एच.12, चाकसू बाईपास,
टोंक रोड, जयपुर–303901 (राजस्थान)

डॉ. मंजु गुप्ता
प्रोफेसर
जगननाथ विश्वविद्यालय, एन.एच.12, चाकसू बाईपास,
टोंक रोड, जयपुर–303901 (राजस्थान)

सारांशः

नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, शिक्षार्थियों के समग्र विकास का उपयोग करके भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलने के लिए शुरू की गई है। यह ढांचा शिक्षा प्रणाली के विकास के लिए एक व्यापक और एकीकृत रणनीति प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) एनईपी पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। आई. के. एस. में भारत का विविध और समृद्ध विरासत ज्ञान शामिल है जिसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी, साहित्य, दर्शन, संस्कृति, चिकित्सा (आयुर्वेद) और योग जैसे विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं। एनईपी ने अंतः विषय और अंतः विषय ज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया है, और यह वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने के लिए आईकेएस के साथ निहित समकालीन ज्ञान को एकीकृत कर सकता है। नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान प्रणाली की सुविधा के लिए भाषा संसाधनों और प्रौद्योगिकी के निर्माण को बढ़ावा देता है क्योंकि यह स्वदेशी ज्ञान के प्रसार के लिए इसके महत्व को पहचानता है। एनईपी के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण से अंतर्निहित समकालीन सामाजिक मुद्दों को समझने और इन मुद्दों पर आगे शोध करने में मदद मिलेगी। यह विभिन्न हितधारकों के बीच समृद्ध और विविध स्वदेशी ज्ञान के विकास और समझ को बढ़ावा देगा और आधुनिक प्रौद्योगिकी की मदद से पारंपरिक ज्ञान को पुनर्जीवित करेगा।

मुख्य शब्दः भारतीय ज्ञान प्रणाली, नई शिक्षा नीति, समकालीन ज्ञान, अंतःविषय ज्ञान और समग्र विकास, प्रौद्योगिकी, पाठ्यक्रम।

1. परिचयः

भारत एक प्राचीन सभ्यता के इतिहास और प्रथाओं वाला देश है जो मानव जाति के लिए जाना जाता है। इससे अपने अस्तित्व के दौरान कुछ ज्ञान जमा होने की उम्मीद की जाती है। इस प्राचीन ज्ञान को ताड़ के पेड़ों पर संरक्षित किया गया था और पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से स्थानांतरित किया गया था। लेकिन समय के साथ ज्ञान परिवर्तन प्रक्रिया में अचानक बदलाव आए और यह स्वदेशी ज्ञान खो गया। नई शुरू की गई शिक्षा प्रणाली ने समाज को इस ज्ञान को मांग के अनुसार प्रदान करने का प्रयास किया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई. के. एस.) में तीन शब्द हैं: भारतीय, ज्ञान और प्रणाली।

चित्र 1. भारतीय ज्ञान प्रणाली के घटक

1.1 **भारतीयः** यह अखंड भारत अर्थात् अविभाजित भारतीय उपमहाद्वीप को संदर्भित करता है। यह पूर्व में बर्मा, पश्चिम में आधुनिक अफगानिस्तान, उत्तर में हिमालय और दक्षिण में हिंद महासागर तक फैले क्षेत्र को शामिल करता है। मौरन साम्राज्य की स्थापना में चाणक्य की महत्वपूर्ण भूमिका थी और संस्कृत व्याकरण लिखने वाली पाणिनी ने अपनी शिक्षा प्राचीन भारत के तक्षशिला विश्वविद्यालय में प्राप्त की जो अब पंजाब, पाकिस्तान में है। प्राचीन भारतीय शिक्षा में अठारह विद्या स्थानों या शिक्षा के स्कूलों का शिक्षण शामिल था, जो नालंदा और तक्षशिला जैसे प्रसिद्ध केंद्रों में प्रदान किए जाते थे। भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा कला, वास्तुकला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिल्प, इंजीनियरिंग, दर्शन और व्यवहार के क्षेत्र में इसके योगदान से प्राप्त हुई है। अधिकांश विदेशी जो ज्ञान के लिए भारत आए और इस ज्ञान को पश्चिम और दुनिया के अन्य हिस्सों में फैलाया। यह आई. के. एस. का हिस्सा है।

1.2 **ज्ञानः** ज्ञान मौन ज्ञान को संदर्भित करता है और यह ज्ञान चाहने वालों के ज्ञान में निहित है। यह व्यक्तिगत अनुभवों में अंतर्दृष्टि, टिप्पणियों के माध्यम से, वास्तविक जीवन की समस्याओं का सामना करने और उन्हें हल करने से प्राप्त होता है। ज्ञान साहित्यिक और गैर–साहित्यिक रूपों में मौजूद हो सकता है। इस मौन ज्ञान को नए सिद्धांतों औरसाहित्यिक कार्यों के रूप में स्थानांतरित किया जाता है।

1.3. **प्रणालीः** प्रणाली का अर्थ है एक सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली और वर्गीकरण योजना जिसका उपयोग ज्ञान के भंडार तक पहुँचने के लिए किया जाता है। संहिताकरण और वर्गीकरण ज्ञान चाहने वाले की आवश्यकता, रुचि और क्षमता पर आधारित होते हैं ताकि वह अंतर्निहित ज्ञान तक पहुँच सके। इससे उन्हें समग्र ज्ञान और जानकारी से अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में और यह जानने में मदद मिलेगी कि विभिन्न ज्ञान घटक तार्किक रूप से एक दूसरे के पूरक हैं

आई. के. एस. प्राचीन और समकालीन ज्ञान का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में व्यवस्थित हस्तांतरण है। इसमें वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से प्राचीन ज्ञान शामिल है। यह ज्ञान साहित्यिक और गैर–साहित्यिक दोनों कार्यों में मौजूद है।

2. भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभाग

अक्टूबर 2020 में, एआईसीटीई मुख्यालय नवगठित आईकेएस प्रभाग का स्थल बन गया, जो शिक्षा मंत्रालय का हिस्सा है (डवम). ज्ञान भंडार में, आई. के. एस. के पास 29 आई. के. एस. अनुसंधान केंद्र, 17 आई. के. एस. शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र और 7 आई. के. एस. भाषा केंद्र हैं। ये अनुसंधान केंद्र अंतःविषय हैं और वे आगे के अनुसंधान और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित करेंगे। आई. के. एस. शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र शिक्षकों को स्वदेशी और पारंपरिक ज्ञान को समझने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे और आई. के. एस. भाषा केंद्र भाषाविज्ञान और साहित्यिक ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए केंद्रों के रूप में कार्य करेंगे। ये केंद्र उन भाषाओं को पुनर्जीवित करेंगे जो विलुप्त होने के कगार पर हैं और इनमें देश को बदलने का ज्ञान होगा।

3. आई. के. एस. प्रभाग के तहत गतिविधियाँ

वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिएः आईकेएस और संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले पारंपरिक स्कूलों और एसटीईएम शैक्षणिक संस्थानों में आईकेएस केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता पर विचार करके दो वर्षों में 30–40 लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी जायेगी।दो महीने के लिये लिए (लगभग 25000 रुपये) के साथ अल्पकालिक अनुसंधान परियोजनाओं/कार्यशालाओं/गतिविधियों को पूरा करने के लिए आई. के. एस. इंटर्नशिप कार्यक्रम के तहत आई. के. एस. विशेषज्ञों के साथ छात्रों को जोड़ना।

भारतीय ज्ञान प्रणालीशिक्षण के लिएः एक अधिक संरचित दृष्टिकोण स्थापित करने के लिए, तकनीकी शिक्षा के लिए नियामक निकाय ने बी. महादेवन द्वारा लिखित 'भारतीय ज्ञान प्रणाली, अवधारणाओं और अनुप्रयोगों का परिचय' नामक एक पाठ्यपुस्तक के निर्माण को अधिकृत किया है।

कुछ आई. आई. टी. ने आई. के. एस. में गहरी रुचि दिखाई है। IIT गुवाहाटी नवंबर 2021 में अपनी स्थापना के बाद से बोली जाने वाली संस्कृत और असमिया में चैप्क की पेशकश कर रहा है। आई. आई. टी. गांधीनगर ने 2016 में आई. के. एस. वैकल्पिक पाठ्यक्रम शुरू किया, जो एन. ई. पी. की प्रमुखता में वृद्धि से काफी पहले था।

4. भारतीय ज्ञान प्रणाली की चुनौतियां

वैश्वीकरण के आगमन के साथ पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को बदलने और आधुनिकीकरण द्वारा इसे वैश्विक मानक बनाने की दौड़ है। शिक्षाशास्त्र, पाठ्यक्रम और शिक्षा के माध्यम में एक नाटकीय बदलाव आया है। इसने सामाजिक गतिशीलता को बहुत बदल दिया है। (इसने सामाजिक साम्राज्यवाद और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद को जन्म दिया है। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद में, उच्च सामाजिक स्थिति वाले देश निम्न सामाजिक स्थिति वाले देशों के समाजों और संस्कृतियों पर हावी होते हैं भारतीय शिक्षा प्रणाली मैकाले मूल की है और अभी भी हम इसका अनुसरण कर रहे हैं। विशाल सूचना प्रणालियों के युग में इस शिक्षा प्रणाली का पालन करते हुए हमने अपने सांस्कृतिक ज्ञान और विरासत को खो दिया है। हमने अपनी कृषि जैव विविधता खो दी है और इसने खाद्य सुरक्षा, पोषण और समग्र कृषि विकास पर दबाव डाला है। बौद्धिक पूंजी का भारी नुकसान हो रहा है। हमारे आई. के. एस. में 7000 से अधिक औषधीय पौधों की प्रजातियाँ और 15,000 से अधिक हर्बल फॉर्मूलेशन हैं। इसने न केवल इसे लोकप्रिय बनाया है, बल्कि यह बायोपाइरेसी की ओर अपना ध्यान आकर्षित कर रहा है और उन्हें देश के भीतर या बाहर पेटेंट करा रहा है। यह गलत स्वामित्व को बढ़ाता है। लोगों में एक द्वव्द है कि क्या स्वदेशी जीवन शैली के साथ जाना है या मुख्यधारा में शामिल होना है।

5. एनईपी और आईकेएस समावेशन

एनईपी 2020 ने इस बात पर जोर दिया है कि आईकेएस पाठ्यक्रम का हिस्सा होगा और इसे वैज्ञानिक रूप से शामिल किया जाएगा। आदिवासी ज्ञान के साथ–साथ आई. के. एस. को गणित, इंजीनियरिंग, दर्शन, योग, चिकित्सा, खेल, खेल साहित्य, भाषाओं और विभिन्न अन्य क्षेत्रों में शामिल किया जाएगा। एनईपी ने जनजातीय नृजातीय चिकित्सा प्रथाओं, वन प्रबंधन और जैविक और प्राकृतिक खेती में विशिष्ट पाठ्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया है। एनईपी के तहत, आईकेएस को माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए एक वैकल्पिक पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाएगा। ये इनपुट आधुनिक तकनीकों, मजेदार खेलों और विभिन्न राज्यों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों के माध्यम से वितरित किए जाएंगे। एनईपी बहुभाषावाद पर केंद्रित है और आईकेएस भंडार में कई भाषाएँ हैं। एनईपी के तहत छात्रों को उनकी मूल भाषाओं में पाठ्यक्रम दिया जाएगा और सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत सभी को पढ़ाई जाएगी। विभिन्न भाषाओं को सीखने से वे राष्ट्र की समृद्ध और विविध संस्कृति को जानेंगे। बहुभाषी सूत्र संवैधानिक प्रावधानों के पहलुओं को शामिल करेगा और यह पूरे देश में एकता और अखंडता पैदा करेगा ("राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020") सामान्य कक्षाओं में भारतीय गणित के इतिहास को शामिल करना आसान होगा। वास्तुकला, दर्शन और आयुर्वेद के लिए भी ऐसा ही किया जा सकता है। यह एनईपी का लक्ष्य है, लेकिन इसे धीरे–धीरे करना होगा।

6. कार्यान्वयन की चुनौतियां

आई. के. एस. को एन. ई. पी. के साथ एकीकृत करने में कुछ चुनौतियां हैं।

(1) आई. के. एस. के महत्व के बारे में समुदाय और हितधारकों के बीच जागरूकता की कमी है।

(2) आई.के.एस. आम तौर पर गैर–साहित्यिक रूप में मौजूद है और इसे मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पारित किया गया है।

(3) इससे शैक्षणिक संस्थानों में आई. के. एस. आधारित पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों को विकसित करना और उन्हें लागू करना मुश्किल हो जाता है।

(4) आईकेएस के बारे में कोई स्पष्ट पाठ्यक्रम नहीं है और यह शिक्षाविदों को भ्रमित कर रहा है

(5) राज्य में स्वायत्त कॉलेजों को लागू करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कई हितधारक इसे अप्रासंगिक या पुराना मान सकते हैं। चूंकि आई. के. एस. विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध है, इसलिए यह उन लोगों के लिए बाधा पैदा कर सकता है जो इन भाषाओं से अच्छी तरह वाकिफ नहीं हैं।

(6) इसके अलावा, शिक्षा की औपनिवेशिक प्रणाली ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में आई. के. एस. के खिलाफ पूर्वाग्रह पैदा कर दिया है।

(7) भारतीय शिक्षा प्रणाली काफी हद तक पश्चिमी ज्ञान प्रणाली पर केंद्रित है और यह इस प्रणाली को समायोजित करने में कठिनाई पैदा कर सकती है।

(8) आई. के. एस. को पढ़ाने के लिए अच्छी तरह से योग्य शिक्षकों की भी कमी है क्योंकि इसे अभी तक व्यापक रूप से अपनाया नहीं गया है।

7. निष्कर्ष

भारत में आई. के. एस. को शामिल करने से हित धारकों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को जानने में मदद मिल सकती है और वे पर्यावरण की गहरी समझ विकसित कर सकते हैं। चूंकि आई. के. एस. मौन ज्ञान पर आधारित है, इसलिए यह छात्रों को जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों जैसी वास्तविक जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने और उनसे निपटने में मदद कर सकता है। लेकिन आई. के. एस. के इस समावेश में कुछ चुनौतियां हैं और समावेश से पहले इन चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है। भारत सरकार ने एनईपी के तहत आईकेएस को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए एक कदम उठाया है। शिक्षकों के उचित प्रशिक्षण की तत्काल आवश्यकता है ताकि उन्हें आई. के. एस. का उचित ज्ञान हो और वे इसे सार्थक तरीके से ज्ञान दे सकें। आई. के. एस. के बारे में उपलब्ध आंकड़ों को सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से सुव्यवस्थित करने और हितधारकों की जरूरतों और क्षमता के अनुसार उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। यह रातोंरात नहीं किया जा सकता है क्योंकि स्वदेशी ज्ञान प्रणाली हजारों वर्षों में भारत में विकसित हुई है। समय के साथ इसे धीरे–धीरे बदला जाएगा।

संदर्भः

1. राज्य के स्वायत्त महाविद्यालयों को लागू करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। 5 जनवरी, 2024।

2. https%@@www-hindustantimes-com@cities@mumbai&news@autonomus&collges&in&state&face&challenges&in&implementing&indian&knowledge&system&101695582233165-html

3. B., M., RAJAT, B. V., & R.N., N. P. (2022).. भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय। पी. एच. आई लर्निंग प्रा. लि.

4. कोलमैन, एम ए। (2010). एक बहु अधिग्रहण में सांस्कृतिक प्रभुत्व पर नकारात्मक संस्कृति का प्रभाव (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, सेंट थॉमस विश्वविद्यालय) (Saint Paul, Minn.)

5. घोष, ए. (2015). पारंपरिक ज्ञानः समस्याएं और संभावनाएं। लोकोदर्पण–ए पीयर–रिव्यूड बाइलिंगुअल एनुअल रिसर्च जर्नल ऑफ फोकलोर, ट.

6. भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ (IKS). 2 जनवरी, 2024।

7. भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई. के. एस) में इसे लागू करने की चुनौतियां। 5 जनवरी, 2024।

8. https%@@www-edeÛlive-com@news@2023@sep@30@indian&knowledge& systems&iks&challenges&of&implementingit&in&classrooms&37911-html

9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 3 जनवरी, 2024।

10. https%@@www-education-gov-in@sites@upload&files@mhrd@files@NEP&Final& English&0-pdf

11. शर्मा, ए., और जोशी, ए. (2018). भारत में शिक्षा पर वैश्वीकरण का प्रभावः वैश्विक मानकों की ओर या सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की ओर? वैश्वीकरण पहेली–सिल्वर लाइनिंग के पीछे काले बादल, 257–265। डोईः 10.1007/978–981–13–1727–9 – 15